يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنفِقُواْ مِن طَيِّبَـٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ
أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُواْ ٱلْخَبِيثَ مِنْهُ
تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغْمِضُواْ فِيهِ ۚ وَٱعْلَمُوٓاْ أَنَّ
ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾ ٱلشَّيْطَـٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم
بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ
عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾ يُؤْتِى ٱلْحِكْمَةَ مَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ
أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُوْلُواْ ٱلْأَلْبَـٰبِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَآ
أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُهُۥ ۗ وَمَا
لِلظَّـٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ إِن تُبْدُواْ ٱلصَّدَقَـٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۖ وَإِن
تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا ٱلْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم
مِّن سَيِّـَٔاتِكُمْ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾ ۞ لَّيْسَ عَلَيْكَ
هُدَىٰهُمْ وَلَـٰكِنَّ ٱللَّهَ يَهْدِى مَن يَشَآءُ ۗ وَمَا تُنفِقُواْ مِنْ خَيْرٍ
فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ٱبْتِغَآءَ وَجْهِ ٱللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُواْ
مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ ٱلَّذِينَ
أُحْصِرُواْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِى ٱلْأَرْضِ
يَحْسَبُهُمُ ٱلْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ ٱلتَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُم بِسِيمَـٰهُمْ لَا
يَسْـَٔلُونَ ٱلنَّاسَ إِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنفِقُواْ مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ
عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾

Theme

Spend the best portion of your wealth. Allah's promise vs. Shaitan's promise. Giving charity in public is good but giving in private is better. Who is eligible for receiving charity.	अपने माल का बेहतरीन हिस्सा अल्लाह की राह में ख़र्च करो। अल्लाह के वादे और शैतान के वादे का तक़ाबुल। अलानिया सदक़ा देना अच्छा है, लेकिन पोशीदा तौर पर सदक़ा देना उससे भी बेहतर है। कौन लोग सदक़ा हासिल करने के मुस्तहिक़ हैं?
Tarjumani	
O believers, spend in Allah's Way the best portion of the wealth you have lawfully earned and that which We have produced for you from the earth, and do not pick out for charity those worthless things that you your-selves would not accept but with closed eyes. Bear in mind that Allah is Self-Sufficient, Praise-worthy, Shaitan threatens you with poverty and prompts you to commit what is indecent, while Allah promises you His forgiveness and bounties, and Allah is All-Sufficient for His creatures' needs and All-Knowing. grants wisdom to whom He pleases; and who-	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो माल तुमने कमाए हैं और जो कुछ हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाला है, उसमें से बेहतर हिस्सा राहे-ख़ुदा में ख़र्च करो	ऐसा न हो कि उसकी राह में देने के लिए बुरी से बुरी चीज़ छाँटने की कोशिश करने लगो	हालाँकि वही चीज़ अगर कोई तुम्हें दे, तो तुम हरगिज़ उसे लेना गवारा न करोगे, अल्ला यह कि उसको कबूल करने में तुम इगमाज़ बरतजाओ	तुम्हें जान लेना चाहिए कि अल्लाह बेनियाज़ है और बेहतरीन सिफ़ात से मुत्तसिफ है	शैतान तुम्हें मुफलिसी से डराता है और शर्मनाक तर्ज़े-अमल इखतियार करने की तरगीब देता है	मगर अल्लाह तुम्हें अपनी बखशिश और फज्ल की उम्मीद दिखता है अल्लाह बड़ा फराखदस्त और दाना

ever is granted wisdom is indeed given a great wealth, yet, none except people of understanding learn a lesson from it. Whatever you spend in charity or what-ever vow you make, surely, Allah knows it. The wrongdoers shall have no helpers. To give charity in public is good, but to give to the poor in private is better and will remove from you some of your sins. Allah is aware of your actions. O Prophet, you are not responsible for their guidance, it is Allah Who guides whom He pleases. Whatever wealth you spend in charity, it is to your own advantage; provided you give to seek the pleasure of Allah. Whatever wealth you spend for the sake of Allah, will be paid back to you in full, and you will not be wronged. Charity is for those needy people who are engaged so much in the cause of Allah that they cannot move about in the land to earn their livelihood: the ignorant think that they are wealthy on	है	जिसको चाहता है हिकमत अता करता है, और जिसको हिकमत मिली, उसे हक़ीकत में बड़ी दौलत मिल गई	इन बातों से सिर्फ़ वही लोग सबक़ लेते हैं जो दानिशमंद हैं| तुमने जो कुछ भी ख़र्च किया हो और जो नज्र भी मानी हो, अल्लाह को उसका इल्म और, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं	अगर अपने सदकात अलानिया दो तो यह भी अच्छा है, लेकिन अगर छिपाकर हाजतमन्दोंको दो तो यह तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है| तुम्हारी बहुत-सी बुराइयाँ इस तर्ज़े-अमल से महव हो जाती हैं| और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को बहरहाल उसकी ख़बर है| ऐ नबी, लोगों को हिदायत बख्श देने की ज़िम्मेदारी तुमपर नहीं है| हिदायत तो अल्लाह ही जिसे चाहता है बख्शता हैं| और राह-खैर में जो माल तुम लोग ख़र्च करते हो, वह तुम्हारे अपने लिए भला है, आख़िर तुम इसी लिए तो ख़र्च करते हो कि अल्लाह की रिज़ हासिल हो; तो जो कुछ माल तुम राहे-खैर में ख़र्च करोगे, उसका पूरा-पूरा अज्र तुम्हें दिया जाएगा और तुम्हारी हक़तलफी हरगिज़ न होगी	खास तौर पर मदद के मुस्तहिक वे तंगदस्त लोग हैं जो अल्लाह के काम

account of their modest behavior. You can recognize them by their look because they do not make insistent demands on people. Whatever you spend on them, surely. Allah knows it.	में ऐसे घिरे गए हैं कि ज़ाती कसबे-मआश के लिए ज़मीन में कोई दौड़-धूप नहीं कर सकते	उनकी खुद्दारी देखकर नावाकिफ़ आदमी गुमान करता है कि ये ख़ुशहाल हैं	तुम उनके चेहरों से उनकी अन्दरूनी हालत पहचान सकते हो	मगर वे ऐसे लोग नहीं हैं कि लोगों के पीछे पड़कर कुछ माँगें	उनकी इआनत में जो कुछ माल ख़र्च करोगे वह अल्लाह से पोशीदा न रहेगा	
Tafsir	